HAZRATE IBRAHIM KI QURBANIYAN

(HINDI BAYAAN)

عَلَيْهِ السَّلَام

हज़रते इब्राहीम की क़ुरबानियां

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में

होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की कु़रबानियां

(मअ़ कुरबानी के फ़ज़ाइल)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाखि़ल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जिसे येह पसन्द हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश होते वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से राज़ी हो, उसे चाहिये कि मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़े।

(فردوس الاخبار بماثور الخطاب، ج۲ص ۲۸۴، حدیث ۲۰۸۳)

बैठते, उठते, जागते, सोते
हो इलाही मेरा शिआ़र दुरूद

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ाति़र बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की नियतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की नियतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा । ۞ देख कर बयान करूंगा । ۞ पारह 14 सूरतुन्नहूल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً ''पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो'' में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा, बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ख़्वाब सच कर दिखाया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माहे ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम अपनी ख़ुश्बूएं, बहारें और बरकतें लुटा रहा है । येह वोह मुबारक महीना है कि जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने साह़िबज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल ज़बीहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ मिल कर सब्रो रिज़ा का ऐसा मन्ज़र पेश फ़रमाया कि जिस की नज़ीर (या'नी मिसाल) नहीं मिलती । आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ज़ुल ह़ज की आठवीं रात एक ख़्वाब देखा जिस में कोई कहने वाला येह कह रहा है : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अपने बेटे को ज़ब्ह़ करने का हुक्म देता है ।" नवीं रात फिर वोही ख़्वाब देखा, दसवीं रात फिर वोही ख़्वाब देखने के बा'द आप عَلَیْہِ السَّلَام ने सुब्ह़ इस ख़्वाब पर अ़मल करने या'नी बेटे की क़ुरबानी का पक्का इरादा फ़रमा लिया । (تفسیر کبیر، ۹/۳۴۶, अज़ बेटा हो तो ऐसा, स. 2-3 मुलतक़त़न) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म पर अ़मल करते हुवे बेटे की क़ुरबानी के लिये ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जब अपने प्यारे बेटे ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को जिन की उ़म्र उस वक़्त 7 साल (या 13 साल या इस से थोड़ी ज़ाइद) थी ले कर चले । (बेटा हो तो ऐसा, स. 3) फिर जिस त़रह़ ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने कहा था उन को उसी त़रह़ बांध दिया, अपनी छुरी तेज़ की, ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को पेशानी के बल लिटा दिया, उन के चेहरे से नज़र हटा ली और उन के गले पर छुरी चला दी, लेकिन छुरी ने अपना काम न किया या'नी गला न काटा । उस वक़्त ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर वह़ी नाज़िल हुई । चुनान्चे, पारह 23 सूरतुस्साफ़्फ़ात आयत नम्बर 104 ता 107 में इरशाद होता है :

www.dawateislami.net

وَ نَادَیۡنٰهُ اَنۡ یّٰۤاِبۡرٰهِیۡمُ ﴿۱۰۴﴾ۙ قَدۡ صَدَّقۡتَ الرُّءۡیَا ۚ اِنَّا کَذٰلِکَ نَجۡزِی الۡمُحۡسِنِیۡنَ ﴿۱۰۵﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الۡبَلٰٓؤُا الۡمُبِیۡنُ ﴿۱۰۶﴾ وَ فَدَیۡنٰهُ بِذِبۡحٍ عَظِیۡمٍ ﴿۱۰۷﴾

तर्जमए कन्जुल ईमान : *"और हम ने उसे निदा फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम बेशक तू ने ख़्वाब सच कर दिखाई, हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को, बेशक येह रोशन जांच थी और हम ने एक बड़ा ज़बीह़ा उस के सदक़े में दे कर उसे बचा लिया।"*

(तفسیر خازن ج۴ ص۲۲ ملخّصاً, अज़ बेटा हो तो ऐसा, स. 12)

आप عَلَیْہِ السَّلَام का तआरुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए से जहां ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का आ'ला मक़ामे सब्रो रिज़ा साबित होता है, वहीं ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का अपने रब عَزَّوَجَلَّ का ह़द दरजा मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार होना भी ज़ाहिर होता है।

क्या हर कोई ख़्वाब देख कर अपना बेटा ज़ब्ह़ कर सकता है ?

याद रहे ! कोई शख़्स ख़्वाब या ग़ैबी आवाज़ की बुन्याद पर अपने या दूसरे के बच्चे या किसी भी इन्सान को ज़ब्ह़ नहीं कर सकता, करेगा तो सख़्त गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार क़रार पाएगा। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जो ख़्वाब की बिना पर अपने बेटे की कुरबानी के लिये तय्यार हो गए, येह ह़क़ है क्यूंकि आप नबी हैं और नबी का ख़्वाब वह़्ये इलाही होता है।

इन ह़ज़रात का इम्तिह़ान था, ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام जन्नती दुम्बा ले आए और **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने प्यारे बेटे के बजाए उस जन्नती दुम्बे को ज़ब्ह़ फ़रमा दिया। (बेटा हो तो ऐसा, स. 19)

आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का नाम "इब्राहीम" है। इब्राहीम सुरयानी ज़बान का लफ़्ज़ है। इस के मा'ना हैं اَبٌ رَحِیۡمٌ (या'नी मेहरबान बाप) चूंकि आप

www.dawateislami.net

बच्चों पर बहुत मेहरबान थे। नीज़ मेहमान नवाज़ी और रह़मो करम में आप मशहूर हैं, इसी लिये आप को इब्राहीम कहा जाता है। बा'ज़ लोगों ने कहा है कि इब्राहीम अस्ल में अबरम था। जिस के मा'ना हैं बुज़ुर्ग, चूंकि आप बहुत से अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के वालिद हैं और सारे दीनों में आप की इ़ज़्ज़त, ह़त्ता कि मुशरिकीने अ़रब भी आप की अ़ज़मत करते थे, इस लिये आप का नामे नामी इब्राहीम हुवा। (तफ़्सीरे नईमी 1/618 मुलतक़तन) आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की कुन्यत अबुज़्ज़ैफ़ान (बहुत मेहमान नवाज़) है। क्यूंकि आप का घर सड़क के किनारे था जो भी वहां से गुज़रता आप उस की मेहमान नवाज़ी करते थे। (تفسیر خازن، تحت قولہ ومن احسن دینا ممن اسلم، ۱/۴۳۴)

आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की विलादत सर ज़मीने "अहवाज़" के मक़ाम "सूस" में हुई फिर आप के वालिद आप को "बाबिल" मुल्के नमरूद में ले आए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ह़िक्मत व दानाई से सरफ़राज़ फ़रमाया और आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ज़मीनो आस्मान की तमाम अश्या का मुशाहदा भी कराया। चुनान्चे, इरशादे रब्बानी है :

﴿وَ كَذٰلِكَ نُرِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ﴾ (پ۷، الانعام: ۷۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और इसी त़रह़ हम इब्राहीम को दिखाते हैं सारी बादशाही आस्मानों और ज़मीन की और इस लिये कि वोह ऐ़नुल यक़ीन वालों में हो जाए।

10 ख़ास फ़ज़ीलतें

आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को दस ऐसी फ़ज़ीलतें ह़ासिल हैं जो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ ख़ास हैं। वोह फ़ज़ीलतें येह हैं : ❀...रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सब से अफ़्ज़ल हैं ❀...ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ही अपने बा'द आने वाले सारे अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के वालिद हैं। (बहारे शरीअ़त, 1/52) ❀...हर आस्मानी दीन में आप ही की पैरवी और इत़ाअ़त है ❀...हर दीन वाले आप की ता'ज़ीम करते हैं ❀...आप ही की

याद क़ुरबानी है ❀...आप ही की यादगार ह़ज के अरकान हैं ❀...आप ही का'बा शरीफ़ की पहली ता'मीर करने वाले या'नी इसे घर की शक्ल में बनाने वाले हैं ❀...जिस पथ्थर (मक़ामे इब्राहीम) पर खड़े हो कर आप ने का'बा शरीफ़ बनाया वहां क़ियाम और सजदे होने लगे ❀...मुसलमानों के फ़ौत हो जाने वाले बच्चों की आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और आप की बीवी साह़िबा ह़ज़रते सारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आ़लमे बरज़ख़ में परवरिश करते हैं ❀...क़ियामत में सब से पहले आप ही को उ़म्दा लिबास अ़त़ा होगा इस के फ़ौरन बा'द हमारे हुज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को।

(तफ़्सीरे नईमी जि. 1 स. 621 मुलख़्ख़सन अज़ : बेटा हो तो ऐसा, स. 21 बित्तग़य्युरिन क़लील)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सब से औ़ला व आ'ला हमारा नबी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा आख़िरी फ़ज़ीलत कि क़ियामत वाले दिन सब से पहले आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को उ़म्दा लिबास मिलेगा बा'द में हमारे नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को, इसे सुन कर किसी के ज़ेह्न में येह ख़याल आ सकता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अफ़्ज़ल हैं ? ब रोज़े क़ियामत सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को हुल्ला अ़त़ा किया जाना अपनी जगह, मगर अफ़्ज़ल हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 3 सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 253 में इरशाद फ़रमाता है :

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह रसूल हैं कि हम ने इन में एक को दूसरे पर अफ़्ज़ल किया इन में किसी से **अल्लाह** ने कलाम फ़रमाया और कोई वोह है जिसे सब पर दरजों बुलन्द किया।*

www.dawateislami.net

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान कि "कोई वोह है जिसे सब पर दरजों बुलन्द किया" के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : इस से मुराद हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं कि आप को ब दरजाते कसीरा (बहुत से दरजों के सबब) तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام पर अफ़्ज़ल किया । इस पर तमाम उम्मत का इजमाअ़ है और ब कसरत अह़ादीस से साबित है । हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वोह ख़साइसो कमालात जिन में आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तमाम अम्बिया पर फ़ाइक़ो अफ़्ज़ल हैं और आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का कोई शरीक (या'नी हम पल्ला) नहीं, बेशुमार हैं कि क़ुरआने करीम में येह इरशाद हुवा : "दरजों बुलन्द किया" इन दरजों की कोई शुमार क़ुरआने करीम में ज़िक्र नहीं फ़रमाई तो अब कौन ह़द लगा सकता है ।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह, 3, बक़रह, तह़्तुल आयह : 253 मुलतक़त़न)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि हमारे प्यारे आक़ा व मौला صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام से अफ़्ज़ल हैं । यहां तक कि जनाबे इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को भी जो ख़साइसो कमालात और बुलन्द मरातिब ह़ासिल हुवे वोह भी हमारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सदक़ा है । क्यूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े से ही दुन्या व माफ़ीहा (दुन्या और जो कुछ इस में है सब) को पैदा किया गया । आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इसी ह़क़ीक़त की त़रफ़ इशारा करते हुवे फ़रमाते हैं :

होते कहां ख़लीलो बिना, का'बा व मिना
लौलाक वाले साह़िबी सब तेरे घर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 203)

www.dawateislami.net

बने दो जहां तुम्हारे लिये

या'नी आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه येह फ़रमा रहे हैं : हर किसी का वुजूद हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़ैज़े नूर से है। अगर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام न होते तो न का'बा ता'मीर करने वाले हज़रते ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام होते, न का'बा शरीफ़ की बुन्याद रखी जाती और न ही मिना की रोनक़ें होतीं। (शर्हे हदाइक़े बख़्शिश अज़ मौलाना हसन क़ादिरी, स : 585) तो आ़लम की पैदाइश भी हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल हुई है और इस काइनाते रंगो बू में चहल पहल भी मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दम क़दम से है। जब ख़ालिक़े अ़र्दो समावात عَزَّوَجَلَّ ने काइनात बसाने का इरादा फ़रमाया तो उस ने अपने हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर की तख़्लीक़ फ़रमाई, उस वक़्त न जिन्न थे न इन्सान, न लौह थी न क़लम, न जन्नतो दोज़ख़, न हुरो मलक थे, न ज़मीनो फ़लक और न ही येह महरो माह वुजूद में आए थे। उस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने महबूब के नूर से लौहो क़लम और अ़र्श व कुरशी पैदा फ़रमाए, फिर उस नूरे पाक से आस्मानो ज़मीन और जन्नतो दोज़ख़ को बनाया, ग़रज़ येह कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते पाक ही मक़्सदे तख़्लीक़े काइनात है। जैसा कि हदीसे क़ुदसी का मफ़्हूम है।

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को वही भेजी : "ऐ ईसा ! मुहम्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर ईमान लाओ ! और तुम्हारी उम्मत में से जो लोग उन का ज़माना पाएं, उन्हें भी हुक्म करना कि उन पर ईमान लाएं" فَلَوْلَا مُحَمَّدٌ مَاخَلَقْتُ اٰدَمَ وَلَا الْجَنَّةَ وَلَا النَّارَ या'नी क्यूंकि अगर मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी न होती तो मैं न आदम को पैदा करता और न ही जन्नतो दोज़ख़ बनाता।" जब मैं ने अ़र्श को पानी पर बनाया तो वोह उस वक़्त जुम्बिश कर रहा था मैं ने उस पर لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ लिख दिया, पस वोह ठहर गया। (الخصائص الکبری، باب خصوصیتہ بکتابۃ اسمہ الشریف ...الخ، ۱/۱۴) गोया कि इस काइनात की सब रोनक़ें हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ही के सबब से हैं।

www.dawateislami.net

ह़दीसे क़ुदसी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

لَقَدْ خَلَقْتُ الدُّنْيَا وَاَهْلَهَا لِاُعَرِّفَهُمْ كَرَامَتَكَ وَمَنْزِلَتَكَ عِنْدِىْ وَلَوْلَاكَ يَا مُحَمَّدُ! مَا خَلَقْتُ الدُّنْيَا۔

या'नी ऐ मेरे ह़बीब (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मैं ने दुन्या और अहले दुन्या को इस लिये पैदा किया कि जो इ़ज़्ज़तो मन्ज़िलत तुम्हारी मेरे यहां है, मैं इन को इस की पहचान करा दूं और ऐ मेरे ह़बीब (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! अगर तुम न होते तो मैं दुन्या को पैदा न करता। (تاریخ دمشق، ۵۱۸/۳, अज़ मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 521) मा'लूम हुवा कि दुन्या की तमाम अश्या यहां तक कि जुम्ला अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को भी वुजूद की दौलत हमारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही के तवस्सुल से मिली है, आप ही अस्ले काइनात और मम्बए़ मौजूदात हैं। इसी लिये तो आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

1. *ज़मीनो ज़मां तुम्हारे लिये, मकीनो मकां तुम्हारे लिये*
   चुनीनो चुनां तुम्हारे लिये, बने दो जहां तुम्हारे लिये
2. *फ़िरिश्ते ख़िदम, रसूले ह़िशम, तमामे उमम, ग़ुलामे करम*
   वुजूदो अ़दम, ह़ुदूसो क़िदम, जहां में इ़यां तुम्हारे लिये

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 348)

अश्आ़र की वज़ाह़त

1. या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह सारी ज़मीन आप की ख़ातिर बनाई गई, जितने भी ज़माने आए, आप ही की ख़ातिर, येह मकान या'नी आबादियां भी आप की ख़ातिर और इन मकानों के मकीन भी आप की ख़ातिर, चुनीनो चुनां या'नी ऐसा वैसा हर शै आप की ख़ातिर बल्कि दोनों जहां ही आप के लिये हैं।
2. या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़िरिश्ते आप के ख़िदमत गुज़ार हैं, अम्बिया व रुसुल عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ैर ख़्वाह हैं, तमाम उम्मतें आप के करम के भिकारी हैं, वुजूद हो या इ़दम या'नी होना हो या न होना हो, आ़लमे ह़ुदूस हो या क़िदम या'नी ज़िन्दगी हो या मौत, नया हो या पुराना, रात हो या दिन इन सब की जल्वा सामानियां आप की ज़ाते बा बकरत के तुफ़ैल हैं।

www.dawateislami.net

क़ौम को नेकी की दा'वत देना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमारे प्यारे नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में सब से बड़ा रुत्बा अ़ता फ़रमाया है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मुक़र्रब व महबूब बन्दों को आसानियों के साथ साथ बहुत सी मुश्किलात में मुब्तला फ़रमा कर इन की आज़माइश भी फ़रमाता है और येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या हर्फ़े शिकायत ज़बान पर लाने के बजाए हमेशा ख़न्दा पेशानी के साथ इन मसाइबो आलाम को बरदाश्त करते हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को भी कई चीज़ों के ज़रीए आज़माया और आप عَلَيْهِ السَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से हर इम्तिहान में कामयाब हुवे । आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम शिर्क की ला'नत में मुब्तला थी । जब आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ए'लाने नबुव्वत फ़रमाया तो सब से पहले अपने अहलो इ़याल में से अपने चचा से आग़ाज़ फ़रमाया और उसे शिर्क से बाज़ रहने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ही मा'बूदे हक़ीक़ी मानने की दा'वत दी । इस का नतीजा येह निकला कि आप عَلَيْهِ السَّلَام का चचा आप की बात मानने की बजाए आप عَلَيْهِ السَّلَام का दुश्मन हो गया । क़ुरआने पाक में येह वाक़िआ़ यूं बयान किया गया है : चुनान्चे, पारह 16, सूरए मरयम, आयत नम्बर 42-43 में इरशाद होता है :

اِذْ قَالَ لِاَبِیْهِ یٰۤاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا یَسْمَعُ وَ لَا یُبْصِرُ وَ لَا یُغْنِیْ عَنْكَ شَیْــٴًـا ﴿۴۲﴾ یٰۤاَبَتِ اِنِّیْ قَدْ جَآءَنِیْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ یَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِیْۤ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِیًّا ﴿۴۳﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जब अपने बाप से बोला ऐ मेरे बाप क्यूं ऐसे को पूजता है जो न सुने न देखे और न कुछ तेरे काम आए ऐ मेरे बाप बेशक मेरे पास वोह इ़ल्म आया जो तुझे न आया तो तू मेरे पीछे चला आ मैं तुझे सीधी राह दिखाऊं ।*

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आयते मुबारका में हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के चचा को बाप से ता'बीर किया गया है, इस की वज्ह बयान करते हुवे हज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : क़ामूस में है कि आज़र, हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के चचा का नाम है । इमाम अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ने मसालिकुल हुनफ़ा में भी ऐसा ही लिखा है, चचा को बाप कहना तमाम मुमालिक में मा'मूल है बिल ख़ुसूस अ़रब में, क़ुरआने करीम में है ﴿نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَ اِلٰهَ اٰبَآىِٕكَ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا﴾ इस में हज़रते इस्माईल को हज़रते या'क़ूब के आबा में ज़िक्र किया गया है बा वुजूद येह कि आप अ़म (या'नी चचा) हैं । (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 261)

अल ग़रज़ आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने चचा को हर त़रह़ से समझाया, लेकिन वोह अपने आबा व अज्दाद के दीन को छोड़ने पर राज़ी न हुवा और इन्तिहाई सख़्त लह्जे में जवाब दिया, जिसे क़ुरआने पाक ने पारह 16, सूरए मरयम की आयत नम्बर 46 में इन लफ़्ज़ों से बयान फ़रमाया है :

قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِیْۚ یٰۤاِبْرٰهِیْمُ ۚ لَىٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَ اهْجُرْنِیْ مَلِیًّا ﴿۴۶﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बोला क्या तू मेरे ख़ुदाओं से मुंह फेरता है ऐ इब्राहीम ! बेशक अगर तू बाज़ न आया तो मैं तुझे पथराव करूंगा और मुझ से ज़मानए दराज़ तक बे अ़लाक़ा हो जा ।*

ठन्डी आग

आप عَلَيْهِ السَّلَام के चचा ने जब आप की बात मानने से इन्कार किया और वोह भी आप का दुश्मन हो गया तो इस के बा'द आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी क़ौम को दा'वत दी तो उन्हों ने भी आप عَلَيْهِ السَّلَام की बात मानने से इन्कार कर

www.dawateislami.net

दिया । मगर आप عَلَيْهِ السَّلَام मुसलसल अपनी क़ौम को नेकी की दा'वत देने और उन्हें कुफ़्रो शिर्क की अन्धेरी वादियों से निकालने के लिये कमर बस्ता रहे मगर वोह बाज़ न आए और वोह भी आप عَلَيْهِ السَّلَام के दुश्मन हो गए और कहने लगे । (پ۲۰، العنکبوت:۲۴) ﴿قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बोले इन्हें क़त्ल कर दो या जला दो । सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : नमरूद और उस की क़ौम आप عَلَيْهِ السَّلَام को जला डालने पर मुत्तफ़िक़ हो गई और उन्हों ने आप عَلَيْهِ السَّلَام को एक मकान में क़ैद कर दिया और क़रयए कौसा में एक इमारत बनाई और एक महीने तक ब कोशिशे तमाम क़िस्म क़िस्म की लकड़ियां जम्अ़ कीं और एक अ़ज़ीम (बड़ी) आग जलाई, जिस की तपिश से हवा में परवाज़ करने वाले परन्दे जल जाते थे और एक मन्जनीक (مَن۔جَ۔نِیق पथ्थर फेंक ने की तोप) खड़ी की और आप عَلَيْهِ السَّلَام को बांध कर उस में रख कर आग में फेंका, उस वक़्त आप عَلَيْهِ السَّلَام की ज़बाने मुबारक पर था حَسْبِیَ اللّٰهُ وَ نِعْمَ الْوَکِیْلُ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे काफ़ी है और क्या ही अच्छा कारसाज़), जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने आप عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया कि क्या कुछ काम है ? आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया तुम से नहीं, जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ से सुवाल कीजिये ! फ़रमाया : सुवाल करने से उस का मेरे ह़ाल को जानना मेरे लिये किफ़ायत करता है । (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 17, अल अम्बिया, तह़्तुल आयह : 68)

तब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस आग को हुक्म फ़रमाया

﴿یٰنَارُ كُوْنِیْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰۤى اِبْرٰهِیْمَ ۙ۶۹﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ आग हो जा ठन्डी और सलामती इब्राहीम पर । (پ۱۷، الانبیا:۶۹) तो आग ने सिवा आप की बन्दिश (रस्सियों वग़ैरा) के और कुछ न जलाया और आग की गर्मी ज़ाइल हो गई और रोशनी बाक़ी रही ।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 17, अल अम्बिया, तह़्तुल आयह : 69)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب!　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आज़माइश पर सब्र अम्बिया का त़रीक़ा है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَاوَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को दीने ह़क़ की दा'वत देने में कैसी हिम्मत, इस्तिक़ामत, ह़ौसले और सब्र से काम लिया । पहले आप عَلَيْهِ السَّلَام के घर वाले आप के दुश्मन हुवे, फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम भी दुश्मन हो गई, इस के बा वुजूद आप عَلَيْهِ السَّلَام ने दा'वते दीन पहुंचाना तर्क न फ़रमाया, बल्कि इन की इस्लाह़ की कोशिश जारी रखी । यहां तक कि उन्हों ने आप عَلَيْهِ السَّلَام को ज़िन्दा आग में जलाने का फ़ैसला कर लिया, तब भी आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इन के आगे झुकना गवारा न किया । और कमाले सब्र देखिये ! उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज भी की, कि कोई ह़ाजत है तो फ़रमाएं पूरी कर दूं ? मगर क़ुरबान जाइये ! ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَاوَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर कि उस वक़्त भी सब्रो रिज़ा के पैकर बने रहे । इस वाक़िए़ से उन इस्लामी भाइयों को भी दर्स ह़ासिल करना चाहिये जो राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में नेकी की दा'वत देते हुवे पेश आने वाली मुसीबतों पर शिकवा करते नज़र आते हैं । याद रखिये ! दीन की तब्लीग़ करना अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की सुन्नते करीमा है और इस राह में मिलने वाली तक्लीफ़ों पर सब्र करना भी इन्ही मुक़द्दस हस्तियों का त़रीक़ा है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अम्बिया व मुर्सलीन عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْم और औलियाए कामिलीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن की आज़माइश फ़रमाता है और इन मसाइबो आलाम पर सब्र करने पर वोह रह़ीमो करीम रब عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत से उन्हें बेशुमार अज्रो सवाब और बुलन्द दरजात से भी नवाज़ता है । हमें भी चाहिये कि जब भी नेकी की दा'वत देते वक़्त कहीं मुश्किलात और मुसीबतों का सामना करना पड़े तो रिज़ाए इलाही की ख़ातिर इसे बरदाश्त करते हुवे सब्र से काम लें । اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से अज्रो सवाब का ख़ज़ाना हमारे हाथ आएगा ।

इस ज़िम्न में दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनिये और अ़मल का जज़्बा पैदा कीजिये ।

www.dawateislami.net

1. "जिस ने मुसीबत पर सब्र किया यहां तक कि उस (मुसीबत) को अच्छे सब्र के साथ लौटा दिया तो अल्लाह तबारक व तआ़ला उस के लिये तीन सो दरजात लिखेगा, हर एक दरजे के माबैन (या'नी दरमियान) ज़मीनो आस्मान का फ़ासिला होगा।" (اَلْجَامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطِی ص۳۱۷ حدیث ۵۱۳۷)
2. "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दे को तक्लीफ़ में मुब्तला रखता है यहां तक कि वोह तक्लीफ़ उस के तमाम गुनाह मिटा देती है।"

(المستدرک، کتاب الجنائز، باب المریض یکتب لہ من۔۔۔۔۔۔ الخ، الحدیث: ۱۳۲۶، ج۱، ص ۶۶۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इश्क़ के इम्तिहां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ज़ौजए मोहतरमा हज़रते बीबी हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बत्ने मुबारक से पैदा हुवे। इन की पैदाइश के बा'द आप (हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम) عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर वह़ी नाज़िल हुई कि आप हज़रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام को उस सर ज़मीन में छोड़ आएं जहां बे आबो गियाह (या'नी बे रौनक़) मैदान और ख़ुश्क पहाड़ियों के सिवा कुछ भी नहीं है। चुनान्चे, हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने हज़रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और हज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام को साथ ले कर सफ़र फ़रमाया और उस जगह आए जहां का'बए मुअ़ज़्ज़मा है। यहां उस वक़्त न कोई आबादी थी न कोई चश्मा, न दूर दूर तक पानी या आदमी का कोई नामो निशान था। एक तौशादान में कुछ खजूरें और एक मश्क में पानी, हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام वहां रख कर रवाना हो गए। हज़रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रयाद की : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी इस सुन्सान बयाबान में जहां न कोई मूनिस है न ग़म ख़्वार, आप हमें बे यारो मददगार छोड़ कर कहा जा रहे हैं ? कई बार हज़रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आप को पुकारा मगर आप ने कोई जवाब नहीं दिया।

www.dawateislami.net

आख़िर में ह़ज़रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने सुवाल किया कि आप इतना फ़रमा दीजिये कि आप ने अपनी मरज़ी से हमें यहां ला कर छोड़ा है या ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से आप ने ऐसा किया है ? तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि ऐ हाजरा ! मैं ने जो कुछ किया है वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से किया है । येह सुन कर ह़ज़रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा कि अब आप जाइये, मुझे यक़ीने कामिल और पूरा पूरा इत़मीनान है कि **अल्लाह** करीम عَزَّوَجَلَّ मुझे और मेरे बच्चे को ज़ाएअ़ नहीं फ़रमाएगा । चन्द दिनों में खजूरें और पानी ख़त्म हो जाने पर ह़ज़रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर भूक और प्यास का ग़लबा हुवा और इन के सीने में दूध ख़ुश्क हो गया और बच्चा भूको प्यास से तड़पने लगा । ह़ज़रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने पानी की तलाश व जुस्त्जू में सात चक्कर सफ़ा व मरवाह की दोनों पहाड़ियों के लगाए, मगर पानी का कोई सुराग़ दूर दूर तक नहीं मिला । ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام प्यास की शिद्दत से एड़ियां पटक पटक कर रो रहे थे । ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने आप की ऐड़ियों के पास ज़मीन पर अपना पैर मार कर ज़म ज़म का चश्मा जारी कर दिया । एक रिवायत के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ऐड़ी से जारी हुवा । (मिरआतुल मनाजीह़, 4/67) इस पानी में दूध की ख़ासिय्यत थी कि येह ग़िज़ा और पानी दोनों का काम करता था । चुनान्चे, येही ज़म ज़म का पानी पी पी कर ह़ज़रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام ज़िन्दा रहे । यहां तक कि ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام जवान हो गए और शिकार करने लगे तो शिकार के गोश्त और ज़म ज़म के पानी पर गुज़र बसर होने लगी । फिर क़बीलए जुरहुम के कुछ लोग अपनी बकरियों को चराते हुवे इस मैदान में आए और पानी का चश्मा देख कर ह़ज़रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की इजाज़त से यहां आबाद हो गए और इसी क़बीले की एक लड़की से ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की शादी भी हो गई और रफ़्ता रफ़्ता यहां एक आबादी हो गई ।

(अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन, स. 145 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

इताअ़त गुज़ार हो तो ऐसा !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ से हमें येह मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام अपने रब तआ़ला के बहुत ही इताअ़त गुज़ार और फ़रमां बरदार थे कि (आप ने रिज़ाए इलाही की ख़ातिर अपना) वोह बच्चा जिस को बड़ी दुआ़ओं के बा'द बुढ़ापे में पाया था, जो आप की आंखों का नूर और दिल का सुरूर था, फ़ितरी तौ़र पर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام इस को कभी अपने से जुदा नहीं कर सकते थे, मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर अपने प्यारे फ़रज़न्द और ज़ौजा को वादिये बतह़ा की उस सुन्सान जगह पर छोड़ आए जहां सर छुपाने को दरख़्त का पत्ता और प्यास बुझाने को पानी का एक क़तरा भी नहीं था, न वहां कोई यारो मददगार, न कोई मूनिस व ग़मख़्वार। हम में से कोई होता तो शायद इस के तसव्वुर ही से उस के सीने में दिल धड़कने लगता, बल्कि शिद्दते ग़म से दिल फट जाता। मगर ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह हुक्म सुन कर न फ़िक्रमन्द हुवे, न एक लम्ह़े के लिये सोच बिचार में पड़े, न रन्जो ग़म से निढाल हुवे बल्कि फ़ौरन ही अपने रब عَزَّوَجَلَّ का हुक्म बजा लाने के लिये बीवी और बच्चे को ले कर मुल्के शाम से सर ज़मीने मक्का में चले गए और वहां बीवी बच्चे को छोड़ कर मुल्के शाम वापस आ गए। **अल्लाहु अकबर** ! इस जज़्बए इताअ़त शिआ़री और जोशे फ़रमां बरदारी पर हमारी जां क़ुरबान !

ऐ काश ! हम भी रिज़ाए इलाही की ख़ातिर इस्लाम की तरवीजो इशाअ़त करने, सुन्नतें सीखने और लोगों में नेकी की दा'वत को आ़म करने के लिये ख़ुद भी और अपने जिगर पारों, आंखों के तारों को ख़ुद से जुदा कर के कई सालों या महीनों के लिये नहीं बल्कि महीने में सिर्फ़ तीन दिन के लिये राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र पर रवाना करने वाले बन जाएं। हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में अपने समझदार और

www.dawateislami.net

बड़े बच्चों के साथ ख़ुद भी शिर्कत करना हमारा मा'मूल बन जाए । दाढ़ी, इ़मामा शरीफ़ और दीगर सुन्नतों पर अ़मल करने और अपने बच्चों को भी सुन्नतों पर अ़मल की तरग़ीब दिलाने की सआ़दत नसीब हो जाए ।

सुन्नतों की करूं ख़ूब ख़िदमत हर किसी को दूं नेकी की दा'वत
नेक मैं भी बनू इ़ल्तिजा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 139)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

राज़ी ब रिज़ाए इलाही

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَاوَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सारी ज़िन्दगी राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में क़ुरबानियां देते हुवे गुज़री । जब भी हुक्मे ख़ुदावन्दी आया तो आप ने ता'मील करते हुवे कभी घर वालों को शिर्क से रोका तो कभी क़ौम को नेकी की दा'वत दे कर इन की मुख़ालफ़त झेली, कभी बादशाहे वक़्त को तौह़ीदो रिसालत का पैग़ामे ह़क़ सुनाया तो कभी अपने क़ौम के हाथों आतश कदे में जलना पड़ा, बड़ी चाहतों और मुरादों के बा'द बुढ़ापे में ह़ासिल होने वाले शीर ख़्वार बेटे को इस की वालिदा के साथ लक़ो दक़ (या'नी वीराने) बयाबान और चटियल मैदान (वोह मैदान जहां कोई सायादार दरख़्त तक न हो) में रब عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से बिग़ैर किसी दुन्यवी सहारे के अकेला छोड़ दिया, तो कभी उसी बेटे की नर्मो नाज़ुक गर्दन पर अपने हाथों से छुरी चलाने तक गुरैज़ न किया । अल ग़रज़ आप عَلَيْهِ السَّلَام की तमाम ज़िन्दगी इत़ाअ़ते इलाही में बसर होती नज़र आती है । आप عَلَيْهِ السَّلَام की दास्ताने ह़यात का एक एक गोशा रिज़ाए इलाही में राज़ी रहने का दर्स देता है । आप عَلَيْهِ السَّلَام का हर ह़ाल में राज़ी ब रिज़ाए इलाही रहने का जज़्बा सद करोड़ मरह़बा ! काश ! कि हम भी आप عَلَيْهِ السَّلَام की त़रह़ अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा में राज़ी रहने वाले बन जाएं, काश ! कि हम भी इत़ाअ़ते इलाही से मा'मूर ज़िन्दगी बसर करने वाले बन जाएं ।

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام राहे ख़ुदा में अपनी अवलाद तक क़ुरबान करने को तय्यार हो गए, ऐ काश ! हम अपना कुछ वक़्त ही राहे ख़ुदा में सर्फ़ करने वाले बन जाएं । ख़ूब ख़ूब मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने के साथ साथ मदनी इन्आ़मात के आ़मिल और मदनी कामों की धूमें मचाने वाले बन जाएं ।

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ह़याते त़य्यिबा से हमें येह भी दर्स मिलता है कि हम पर कितनी ही बड़ी मुसीबत क्यूं न आ जाए और कैसी ही बड़ी आज़माइश में क्यूं न मुब्तला हो जाए, लेकिन अपने रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा में राज़ी रहते हुवे सब्रो शुक्र के साथ उस वक़्त को गुज़ारना चाहिये । बिल फ़र्ज़ ! अगर हम किसी मुसीबत का शिकार हो भी जाए, तब भी वावेला मचाने के बजाए ख़ुद को मिलने वाले सवाबे अ़ज़ीम की त़रफ़ नज़र करनी चाहिये । कितनी ही ने'मतें ऐसी हैं जो बिन मांगे हमें अ़त़ा हुई हैं और इन का सिलसिला बढ़ता ही चला जा रहा है । यक़ीनन ख़ुदाए अह़कमुल ह़ाकिमीन عَزَّوَجَلَّ की बेशुमार ने'मतें सारी काइनात के ज़र्रे ज़र्रे पर बारिश की बूंदों, दरख़्तों के पत्तों, समन्दर के क़त़रों और रैत के ज़र्रों से ज़ियादा हर लम्ह़ा, हर घड़ी बिन मांगे तूफ़ानी बारिशों से तेज़ तर बरस रही हैं । जिन को शुमार करने का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता और इस का ए'लान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ुद अपने प्यारे कलाम में फ़रमा रहा है, चुनान्चे, इरशाद होता है :

وَ اِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ (پارہ:۱۳، ابراہیم:۳۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर* ***अल्लाह*** *की ने'मतें गिनो तो शुमार न कर सकोगे ।*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन इस में कोई शक नहीं कि बन्दा किसी वक़्त, किसी लम्ह़े, किसी भी ह़ालत में अपने ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ की बे ह़द व बे अ़दद ने'मतों से ला तअ़ल्लुक़ नहीं हो सकता । इस लिये अगर कोई आज़माइश की घड़ी मुक़द्दर में आ ही जाए, या कोई ने'मत ख़त्म हो जाए, तब भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दूसरी ला ता'दाद ने'मतें तो मौजूद होती

www.dawateislami.net

हैं । लिहाज़ा अ़क़्लमन्द वोही है जो ऐसे लम्हात में सब्र का दामन न छोड़े और रिज़ाए इलाही की ख़ातिर इसे बरदाश्त करे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से अज्रो सवाब का ढेरों ढेर ख़ज़ाना हमारे हाथ आएगा । चुनान्चे,

दो फ़रामैने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **सुनिये :**

मुसलमान को जो भी तक्लीफ़, अज़िय्यत, अन्देशा, ग़म और मलाल पहुंचे यहां तक कि अगर उस को कांटा भी चुभ जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन तकालीफ़ के सबब उस के गुनाह मिटा देता है ।

(صحیح البخاری، کتاب المرضی، باب کفارۃ المرض، الحدیث ۵۶۴۰، ج، ۴، ص، ۳)

क़ियामत के दिन जब मुनादी निदा करेगा : कौन है जिस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर क़र्ज़ है ? तो मख़्लूक़ कहेगी : ऐसा कौन है जिस का क़र्ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर हो ? फ़िरिश्ते कहेंगे : वोह जिसे (दुन्या में) ऐसी मुसीबत में मुब्तला किया गया जिस से उस का दिल ग़मगीन हुवा, आंखों से आंसू बहे लेकिन उस ने सवाब की उम्मीद पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये सब्र किया आज वोह खड़ा हो जाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपना अज्र ले ले ।

(नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं, स. 63)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ुरबानी की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि हम अपने अन्दर सब्रो शुक्र जैसी आ़दात पैदा करने की कोशिश करें और इन अवसाफ़े ह़मीदा को अपनी ज़ात पर नाफ़िज़ करने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ येह भी है कि हम अपने अस्लाफ़ की सीरतो किरदार का मुत़ालआ़ करें । जब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के वाक़िआ़त पढ़ेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन के किरदारों की मदनी महक से हमारी ज़िन्दगी भी महक उठेगी । आज हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَاوَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुतअ़ल्लिक़ सुना । आप عَلَيْهِ السَّلَام ने सारी ज़िन्दगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी में गुज़ारी, हुक्मे ख़ुदावन्दी में अपना तन, मन, धन फ़िदा करने का अ़मली

www.dawateislami.net

मुज़ाहरा किया, यहां तक कि चांद सा बेटा भी राहे ख़ुदा में क़ुरबान करने से दरेग़ नहीं किया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को आप عَلَيْهِ السَّلَام की येह अदा इतनी पसन्द आई कि तमाम उम्मते मुस्लिमा को हुक्म फ़रमा दिया कि तुम भी मेरे ख़लील (عَلَيْهِ السَّلَام) की इस अदा पर अ़मल करते हुवे जानवर ज़ब्ह़ किया करो। चुनान्चे, हर बालिग़, मुक़ीम मुसलमान मर्द व औ़रत, मालिके निसाब पर क़ुरबानी वाजिब है। (عالمگیری ج۵ص۲۹۲، ملتقطاً) मालिके निसाब होने से मुराद येह है कि उस शख़्स के पास साढ़े बावन तोले चांदी या इतनी मालिय्यत की रक़म या इतनी मालिय्यत का तिजारत का माल या इतनी मालिय्यत का (ह़ाजाते अस्लिया से ज़ाइद) सामान हो और उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ या बन्दो का इतना क़र्ज़ा न हो जिसे अदा कर के बयान कर्दा निसाब बाक़ी न रहे। (عالمگیری، ۱/۱۸۷، ملخصاً) फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ह़ाजते अस्लिया (या'नी ज़रूरियाते ज़िन्दगी) से मुराद वोह चीज़ें हैं जिन की उ़मूमन इन्सान को ज़रूरत होती है और इन के बिग़ैर गुज़र अवक़ात में शदीद तंगी व दुश्वारी मह़सूस होती है जैसे रहने का घर, पहनने के कपड़े, सुवारी, इ़ल्मे दीन से मुतअ़ल्लिक़ किताबें और पेशे से मुतअ़ल्लिक़ औ़ज़ार वग़ैरा। (عالمگیری، ۱/۱۷۲، ملخصاً)

कई अह़ादीसे मुबारका में क़ुरबानी के फ़ज़ाइल वारिद हुवे हैं।

आइये ! इन में से दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनते हैं :

1. ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अ़रक़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह क़ुरबानियां क्या हैं ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम्हारे बाप इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की सुन्नत हैं। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन में हमारे लिये क्या सवाब है ? फ़रमाया : हर बाल के बदले एक नेकी है। अ़र्ज़ की : और ऊन में ? फ़रमाया : इस के हर बाल के बदले भी एक नेकी है।"

(ابن ماجہ، کتاب الاضاحی، باب ثواب الاضحیہ، رقم ۳۱۲۷، ج۳، ص۵۳۱)

www.dawateislami.net

2. एक और ह़दीसे मुबारका में है : ऐ लोगो ! ख़ुश दिली से क़ुरबानी किया करो और इन के ख़ून पर रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ और अज्र की उम्मीद रखो अगर्चे वोह ज़मीन पर गिर चुका हो, क्यूंकि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़िफ़ाज़त में गिरता है । (المعجم الاوسط، الحدیث: ۸۳۱۹، ج۶، ص۱۴۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! जिस शख़्स पर शरई उसूलों की बिना पर क़ुरबानी वाजिब है उस पर क़ुरबानी से मुतअ़ल्लिक़ मसाइल सीखना भी लाज़िम हैं । फ़ी ज़माना इल्मे दीन से दूरी के बाइस मुसलमान इस अहम फ़रीज़े को भी कमाह़क़्क़ुहू (जैसा कि इस का ह़क़ है) अदा नहीं कर पाते, हमारे मुआ़शरे की एक ता'दाद ऐसी है जिन की दीनी मा'लूमात का ह़ाल येह है कि एक ही घर में रहने वाले मुख़्तलिफ़ मालिके निसाब अफ़राद पूरे घर की त़रफ़ से एक ही बकरा क़ुरबान कर देते हैं और क़ुरबानी के लिये कैसा जानवर होना चाहिये ? या किस ऐ़ब की वज्ह से क़ुरबानी नहीं होगी ? उन्हें मा'लूम ही नहीं होता और वोह क़ुरबानी करने के बा'द इस ख़ुश फ़हमी में मुब्तला रहते हैं कि हम ने भी सुन्नते इब्राहीमी पर अ़मल कर लिया और हमारा वाजिब अदा हो गया । ह़ालांकि उन के ज़िम्मे वाजिब की अदाएगी बाक़ी रहती है । इस लिये क़ुरबानी के अह़कामात का इल्म होना बहुत ज़रूरी है । क़ुरबानी में पेश आने वाले मसाइल के मुतअ़ल्लिक़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के 48 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "अब्लक़ घोड़े सुवार" का मुत़ालआ़ बहुत ही मुफ़ीद रहेगा । हर इस्लामी भाई को चाहिये कि क़ुरबानी करने से पहले कम अज़ कम एक बार तो ज़रूर इस रिसाले का मुत़ालआ़ फ़रमा लें । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्मे दीन का ढेरों ढेर ज़ख़ीरा हाथ आएगा और क़ुरबानी के बहुत से मसाइल से भी आगाही होगी । क़ुरबानी के मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब "बहारे शरीअ़त जिल्द 3 ह़िस्सा 15" से क़ुरबानी के मसाइल का मुत़ालआ़ कीजिये या दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से रुजूअ़ कीजिये ।

www.dawateislami.net

क़ुरबानी की खालें दा'वते इस्लामी को दीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी, ख़िदमते दीन के कमो बेश 97 शो'बों में सुन्नतों की ख़िदमत में मश्ग़ूल है । इन तमाम शो'बाजात को चलाने के लिये माहाना करोड़ों रूपे के अख़राजात होते हैं । हमें भी हुसूले सवाब की ख़ातिर दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की तरक़्क़ी के लिये अपने घर, रिश्तेदारों और अहले मह़ल्ला के साथ साथ मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में जा जा कर दा'वते इस्लामी के शो'बाजात का तआ़रूफ़ करवाते हुवे क़ुरबानी की खालें जम्अ़ करने की भरपूर कोशिश भी करनी है और अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को येह तरग़ीब भी दिलानी है कि वोह भी अपनी क़ुरबानी के जानवर की खाल दा'वते इस्लामी को दे कर नेकी के कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लेने की सआ़दत ह़ासिल करें । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की क़ुरबानियों के बारे में सुना और ज़िमनन इन से मुत़ल्लिक़ मदनी फूल ह़ासिल किये । आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी सारी ज़िन्दगी इत़ाअ़ते खुदावन्दी और रिज़ाए इलाही में बसर फ़रमाई । वक़्तन फ़ वक़्तन मसाइबो मुश्किलात का सामना हुवा मगर आप ने सब्रो शुक्र और रिज़ाए इलाही में राज़ी रहने को तरजीह़ दी और कभी ह़र्फ़े शिकायत ज़बां पर न लाए । हमें भी चाहिये कि अपनी ज़िन्दगी को इत़ाअ़ते इलाही में गुज़ारें, हर मुआ़मले में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की पैरवी करते रहें । आज़माइशों पर सब्र और ने'मतें मिलने पर शुक्रे इलाही बजा लाएं तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में सआ़दतें हमारा मुक़द्दर होंगी ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मजलिसे मज़ाराते औलिया का तआ़रुफ़ :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी दुन्या भर में नेकी की दा'वत को आ़म करने, सुन्नतों की ख़ुश्बू फैलाने, इ़ल्मे दीन की शम्एं जलाने में मसरूफ़ है । दुन्या के कमो बेश 192 मुमालिक में इस का मदनी पैग़ाम पहुंच चुका है । सारी दुन्या में मदनी काम को मुनज़्ज़म करने के लिये तक़रीबन 95 से ज़ियादा शो'बाजात क़ाइम हैं, इन्ही में से एक शो'बा ''मजलिसे मज़ाराते औलिया'' भी है । इस मजलिस के ज़िम्मादारान दीगर मदनी कामों के साथ साथ बुज़ुर्गाने दीन के मज़ाराते मुबारका पर हाज़िर हो कर मुख़्तलिफ़ दीनी ख़िदमात सर अन्जाम देते हैं । मसलन ह़त्तल मक़्दूर साहिबे मज़ार के उ़र्स के मौक़अ़ पर इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त का इनइ़क़ाद, मुलहिक़ा मसाजिद में आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िले सफ़र करवाना और बिल ख़ुसूस उ़र्स के दिनों में मज़ार शरीफ़ के इह़ाते में सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़े लगाना, जिन में वुज़ू, ग़ुस्ल, तयम्मुम, नमाज़ और ईसाले सवाब का त़रीक़ा, मज़ारात पर हाज़िरी के आदाब और सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें सिखाई जाती हैं नीज़ दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की तरग़ीब भी दिलाई जाती है, अय्यामे उ़र्स में साहिबे मज़ार की ख़िदमत में ढेरों ढेर ईसाले सवाब के तह़ाइफ़ पेश करना, नीज़ साहिबे मज़ार बुज़ुर्ग के सज्जादा नशीन, ख़ुलफ़ा और मज़ारात के मुतवल्ली साहिबान से वक़्तन फ़ वक़्तन मुलाक़ात कर के उन्हें दा'वते इस्लामी की ख़िदमात, जामिआ़तुल मदीना व मदारिसुल मदीना और मुल्क व बैरूने मुल्क होने वाले मदनी कामों से आगाह करना वग़ैरा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी को दिन दुगनी रात चुगनी तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

12 मदनी कामों में ह़िस्सा लीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप भी सुन्नतों की ख़िदमत के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये । ज़ैली ह़ल्के़ के 12 मदनी काम मुसलमानों को राहे सुन्नत पर चलाने में बहुत मुआ़विन हैं । इन 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "**मद्रसतुल मदीना बालिग़ान**" में पढ़ना पढ़ाना भी है । कु़रआने पाक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुबारक कलाम है, इस का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना सुनाना सब सवाब का काम है, लेकिन येह सवाब उसी वक़्त मिलेगा जब कि दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ के साथ पढ़ा गया हो वरना बसा अवक़ात सवाब के बजाए बन्दा अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ बन जाता है । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "बिला शुबा इतनी तजवीद जिस से तस्ह़ीहे़ (تَصۡ-حِیۡ-حِ) हु़रूफ़ हो (क़वाइ़दे तजदीद के मुत़ाबिक़ हु़रूफ़ को दुरुस्त मख़ारिज से अदा कर सके) और ग़लत़ ख़्वानी (या'नी ग़लत़ पढ़ने) से बचे, फ़र्ज़े ऐ़न है ।" (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि 6, स. 343) कु़रआने करीम पढ़ना और पढ़ाना किस क़दर बाइ़से फ़ज़ीलत है । चुनान्चे, नबिय्ये मुकर्रम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : خَیۡرُکُمۡ مَنۡ تَعَلَّمَ الۡقُرۡاٰنَ وَعَلَّمَہٗ या'नी तुम में बेहतरीन शख़्स वोह है जिस ने कु़रआन सीखा और दूसरों को सिखाया । (صَحِیۡحُ الۡبُخَارِی ج ۳ ص ۴۱۰ حدیث ۵۰۲۷) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान सुलमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ मस्जिद में कु़रआने पाक पढ़ाया करते और फ़रमाते : इसी ह़दीसे मुबारक ने मुझे यहां बिठा रखा है । (فَیضُ القَدِیر ج۳ ص۲۱۸ تحت الحدیث ۳۹۸۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम भी दुरुस्त क़वाइद व मख़ारिज के साथ कु़रआने करीम पढ़ने के ख़्वाहिशमन्द हैं और पढ़ना भी चाहिये तो मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में ज़रूर शिर्कत कीजिये । اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुख़्तलिफ़ मक़ामात और मसाजिद वग़ैरा में उ़मूमन बा'द नमाज़े इ़शा हज़ारहा मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) की तरकीब होती है, जिन में बड़ी उ़म्र के इस्लामी भाई सह़ीह़ मख़ारिज से हु़रूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ कु़रआने

www.dawateislami.net

करीम सीखते और दुआ़एं याद करते, नमाज़ें वग़ैरा दुरुस्त करते और सुन्नतों की ता'लीम मुफ़्त ह़ासिल करते हैं । इलावा अज़ीं दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में घरों के अन्दर तक़रीबन रोज़ाना हज़ारों मदारिस बनाम मद्रसतुल मदीना (बराए बालिग़ात) भी लगाए जाते हैं, जिन में इस्लामी बहनें क़ुरआने पाक, नमाज़ और सुन्नतों की मुफ़्त ता'लीम पातीं और दुआ़एं याद करती हैं । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की बरकत से कई इस्लामी भाइयों की इस्लाह़ भी हुई है । आइये इसी ह़वाले से एक ईमान अफ़रोज़ मदनी बहार सुनते हैं ।

मेरी ज़िन्दगी में बहार आ गई

ज़म ज़म नगर, ह़ैदराबाद (बाबुल इस्लाम, सिन्ध) के अ़लाक़े आफ़न्दी टाऊन में मुक़ीम एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे बुलाब है : मैं एक फ़ैशन परस्त नौजवान था, दुन्या की मौज मस्ती में गुम, अपनी आख़िरत के अन्जाम से ग़ाफ़िल अय्यामे ह़यात बसर कर रहा था कि मेरी सोई हुई क़िस्मत जाग उठी, मुझे मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) की रूह़ानी फ़ज़ाएं तो क्या मुयस्सर आईं मेरी तो ख़ुश बख़्ती के सफ़र का आग़ाज़ हो गया, मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) की बरकात ने मेरे तारीक दिल को ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा के चराग़ से मुनव्वर कर दिया । इस में मुझे क़ुरआने करीम की ता'लीम के साथ साथ सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा भी मिला और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत भी नसीब हुई । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में पढ़ने की बरकत से मेरी ज़िन्दगी में बहार आ गई, फ़ैशन परस्ती व मौज मस्ती से नजात ह़ासिल हो गई और मैं दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर मदनी क़ाफ़िला ज़िम्मेदार की ह़ैसिय्यत से मदनी कामों की धूमें मचा रहा हूं ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث: ۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

सफ़र की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अकसरो बेशतर हमें सफ़र की ज़रूरत पेश आती रहती है, लिहाज़ा हम कोशिश कर के सफ़र की भी कुछ न कुछ सुन्नतें और आदाब सीख लें ताकि इन पर अ़मल कर के हम अपने सफ़र को भी हुसूले सवाब का ज़रीआ़ बना सकें ।

❀....मुमकिन हो तो जुमा'रात को सफ़र की इब्तिदा की जाए कि जुमा'रात को सफ़र की इब्तिदा करना सुन्नत है । (اشعۃ اللمعات، ج۵، ص۱۶۱) ❀....अगर सहूलत हो तो रात को सफ़र किया जाए कि रात को सफ़र जल्द त़ै होता है ❀....अगर चन्द इस्लामी भाई मिल कर मदनी क़ाफ़िले की सूरत में सफ़र करें तो किसी एक को अमीर बना लें । ❀....चलते वक़्त अ़ज़ीज़ों, दोस्तों से क़ुसूर मुआ़फ़ करवाएं और जिन से मुआ़फ़ी त़लब की जाए उन पर लाज़िम है कि दिल से मुआ़फ़ कर दें । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 6, स. 19) ❀....लिबासे सफ़र पहन कर अगर वक़्ते मकरूह न हो तो घर में चार रकअ़त नफ़्ल "اَلْحَمْدُ وَقُلْ" से पढ़ कर बाहर निकलें, वोह रकअ़तें वापसी तक अहलो माल की निगह़बानी करेंगी । ❀....हम जब भी सफ़र पर रवाना हों तो हमें चाहिये कि हम अपने अहलो माल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़वाले कर के जाएं । बल्कि हो सके तो अपने घर वालों को येह कलिमात कह कर सफ़र पर रवाना हों : اَسْتَوْدِعُكَ اللّٰهَ الَّذِیْ لَا یُضِیْعُ وَدَائِعَهٗ **तर्जमा :** मैं तुम को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़वाले करता हूं जो सोंपी हुई अमानतों को ज़ाएअ़ नहीं करता । (سنن ابن ماجہ، کتاب الجہاد، باب تشییع الغزوۃ وودا عھم، الحدیث، ۲۸۲۵، ج۳، ص۳۷۲)

www.dawateislami.net

❀....सफ़रे तिजारत करने वाले इस्लामी भाइयों को चाहिये कि येह पांच सूरतें पढ़ लिया करें।

(1) قُلْ يٰاَيُّهَاالْكٰفِرُوْنَ आख़िर तक (2) اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ आख़िर तक

(3) قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ आख़िर तक (4) قُلْ اَعُوْذُبِرَبِّ الْفَلَقِ आख़िर तक

(5) قُلْ اَعُوْذُبِرَبِّ النَّاسِ आख़िर तक।

❀....जब सीढ़ियों पर चढ़ें या ऊंची जगह की त़रफ़ चलें, या हमारी बस वग़ैरा किसी ऐसी सड़क से गुज़रे जो ऊंचाई की त़रफ़ जा रही हो तो ''اَللّٰهُ اَكْبَرُ'' कहना सुन्नत है और जब सीढ़ियों से उतरें या ढलान की त़रफ़ चलें तो ''سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ'' कहना सुन्नत है।

❀....मुसाफ़िर को चाहिये कि वोह दुआ़ से ग़फ़्लत न करे कि येह जब तक सफ़र में है इस की दुआ़ क़बूल होती है बल्कि जब तक घर नहीं पहुंचता उस वक़्त तक दुआ़ मक़्बूल है।

❀....मन्ज़िल पर उतरें तो वक़्तन फ वक़्तन येह दुआ़ पढ़ें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर नुक़सान से बचेंगे। दुआ़ येह है : اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّمَا خَلَقَ **तर्जमा : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कलिमाते ताम्मह की पनाह मांगता हूं उस के शर से जिसे उस ने पैदा किया। (کنز العمال، کتاب السفر، الفصل الثانی فی آداب السفر، الحدیث ۱۷۵۰۸، ج۶، ص۳۰۱)

❀....सफ़र से वापसी पर घर वालों के लिये कोई तोह़फ़ा ले आएं कि येह सुन्नते मुबारका है। सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब सफ़र से कोई वापस आए तो घर वालों के लिये कुछ न कुछ हदिय्या लाए, अगर्चे अपनी झोली में पथ्थर ही डाल लाए। (کنز العمال، کتاب السفر، الفصل الثانی فی آداب السفر، الحدیث ۱۷۵۰۲، ج۶، ص۳۰۱)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब ''सुन्नतें और आदाब'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक और 2 दुआ़

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ١٥١ ملخصًا)

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَيضاً ص ٦٥)

﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ٢٧٧)

﴾4﴿ छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِىْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات)

www.dawateislami.net

﴾5﴿ क़ुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के दरमियान बिठा लिया । इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है ! ! !** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ١٢٥)

﴾6﴿ दुरूदे शफ़ाअ़त :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

शाफ़ेए उमम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है **:** जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغیب والترہیب ج ٢ ص ٣٢٩، حدیث ٣١)

﴾1﴿ एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَى اللهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** इस को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مجمع الزوائد ج ١٠ ص ٢٥٤ حدیث ١٧٣٠٥)

﴾2﴿ हर रात इबादत में गुज़ारने का आसान नुस्ख़ा

ग़राइबुल क़ुरआन सफ़ह़ा 187 पर एक रिवायत नक़्ल की गई है कि जो शख़्स रात में येह दुआ़ 3 मरतबा पढ़ लेगा तो गोया उस ने शबे क़द्र को पा लिया । लिहाज़ा हर रात इस दुआ़ को पढ़ लेना चाहिये ।

दुआ़ येह है **:**

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ ، سُبْحٰنَ اللهِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْم

(या'नी ख़ुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. **1163-1164**)

www.dawateislami.net